

मानव भाव में छिपा स्वभाव...

‘तुम अबसे तूफान मचाओगे तो स्कूल से निकाल दिया जाएगा। तू नफट है। ना ही तुम्हारे ऊपर धमकी का असर होता है और ना ही सिखाने का।’ - प्रिन्सीपल ने अंतिम चेतावनी देते हुए कहा।

‘अब तुम चुप ही रहना। मैं ऑफिस से थका-पका आया हूँ। ज़रा आराम से सांस लेने दो। सारी दुनिया बदल गई लेकिन तुम नहीं बदलने वाली। मुझे देखते ही फरियाद का पिटारा खोल के बैठ जाती है।’ - लाचार पति की प्रतिक्रिया।

‘मिस्टर अखिलेश, क्या नियमितता जैसे महत्व के शब्द को आपने शब्दकोश में से विदाई दे दी है? मेमो दे दे के तो मैं थक गया हूँ, लेकिन पत्थर पर पानी। क्या तुम कभी नहीं सुधरोगे? सुधरने के लक्षण तो दिखाई नहीं देते!’ - बाँस नियमित रूप से अनियमित कर्मचारी को टोकता रहता है।

इस प्रकार की फरियाद अन्य व्यक्तियों की भी हो सकती है। मनुष्य दूसरे मनुष्य के स्वभाव को समझने की कोशिश नहीं करता, जिससे बहुत सारे प्रश्न खड़े हो जाते हैं। मनुष्य हो या प्रकृति का कोई भी तत्व, सब स्वभाव से बंधे हुए हैं। नहीं तो दुर्योधन हो सकता था? रावण ने बुराई छोड़ दी होती? इसीलिए वाल्मिकी रामायण में कहा गया है कि नीम में से कभी शहद नहीं टपकता, ये कहावत सत्य है। हरेक मनुष्य की एक अपनी प्रकृति है, अपने लक्षण होते हैं, जो अच्छा भी हो सकता है और खराब भी हो सकता है। शब्दकोश में ‘प्रकृति’ शब्द के कई अर्थ बताये गए हैं। उसके अनुसार प्रकृति माना ताशिर, मिजाज, पूर्व संस्कारों

के अधीन स्वभाव, जन्म से स्वभाव, जाति का स्वभाव।

‘प्रकृति’ शब्द में ‘प्र’ यानि ‘सत्व गुण’, ‘कृ’ यानि ‘रजो गुण’ और ‘ति’ यानि ‘तमोगुण’। ये जगत प्रकृति का ही विकार है, ऐसा शास्त्रों में लिखा है।

फिर ऋषि ने इस संदर्भ में गुण और मन के विषय में कहा - ‘जलाना आग का गुण है।’ ‘शीतलता बर्फ का गुण है’ ‘कड़वाहट करेले का गुण है’, ‘मिठास शक्कर का गुण

मानव प्रकृति से

बंधा हुआ है और

मन उस बंधन को

बनाये रखने में

आग में घी का

काम करता है।

इसलिए मनुष्य की

प्रकृति को बदलने का कार्य, जितना हम सोचते हैं कि

सरल है, उतना सरल नहीं है। मन? उसके मुख्य चार

गुण हैं : तर्क, अहंकार, विचार और दलील। जिसने भी

इन चार गुणों का शरण स्वीकार लिया है तो दुर्गुणों की

स्वीकृति ना हो ये हो नहीं सकता।



है।’ ‘लेकिन मन? उसके मुख्य चार गुण हैं : तर्क, अहंकार, विचार और दलील। जिसने भी इन चार गुणों का शरण स्वीकार लिया है तो दुर्गुणों की स्वीकृति ना हो ये हो नहीं सकता। याद रखना : मन नौकर के रूप में महान है लेकिन मालिक के रूप में खतरनाक से भी खतरनाक है। ऐसा श्रेष्ठ जीवन जो सार्थक करना चाहते हो, तो मन को किसी भी परिस्थिति में मालिक न बनने दो।’

मानव प्रकृति से बंधा हुआ है और मन उस बंधन को बनाये रखने में आग में घी का काम करता है। इसलिए मनुष्य की प्रकृति को बदलने का कार्य, जितना हम सोचते हैं

कि सरल है, उतना सरल नहीं है।

लेकिन मुंशी प्रेमचंद के मतानुसार प्राकृतिक गुण में परिवर्तन नहीं हो सकता, लेकिन स्वभाव उपार्जित गुण है, उसमें शिक्षा और सत्संग

से सुधार लाया जा सकता है। मूल बात है मनुष्य के नीयत की। मनुष्य सुधरने का निश्चय करे और मन पर विजय प्राप्त करने का संकल्प और साधना का मार्ग अपनाये तो उसमें सुधरने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। कभी-कभार मनुष्य को सुधरने के तमाम प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं, जबकि सच्चा प्रेम चमत्कारिक काम कर जाता है। जैसे एक कठोर चेतावनी ने वालिया लुटेरे को भी वाल्मीकि ऋषि बना दिया। सार रूप में यही कि सदबुद्धि के सिवाय बाकी सब बुद्धि आत्मा के लिए लाभदायक नहीं हैं।

मनुष्य को स्वभाव की मर्यादा को परखने के लिए आत्मज्ञान का सहारा लेना चाहिए। स्वभावगत छोटी-छोटी क्षतियों को दूर करने की कोशिश करने से, जो बड़े से बड़ा दुर्गुण विकसित होता है उन पर नियंत्रण लाया जा सकता है। इसलिए कहा गया है

‘उगते दुर्गुण को दरकिनार करें तो ये योग, अगर वो व्यापक हो गया तो रग-रग में रोग।’ बहुत से मनुष्य मन में ऐसी मान्यता बनाकर एक

अहंकार के वश होते हैं कि अपन तो ठीक ही हैं! दूसरे को सुधरना है तो सुधरे। ऐसे लोग स्वयं के स्वभाव के दास होते हैं मालिक नहीं।

मनुष्य को स्वयं के स्वभाव को सुधारने के लिए पाँच बातें अपनानी चाहिए।

1. दुराग्रह, हठाग्रह और ज़िद्द के अहंकार के वश न होने का संकल्प करें और उसे दूर करने के लिए भटकते मन को नियंत्रण में रखें।
2. खराब स्वभाव का गर्व ना करें, स्वभाव की विकृति को लज्जा का विषय मानें।
3. दूसरे का स्वभाव खराब है इसलिए मैं मेरा स्वभाव क्यों सुधारूँ - ऐसे झूठे तर्क का सदा के लिए त्याग करें।
4. दूसरे के खराब स्वभाव के कारण उन्हें मिले दुष्परिणाम का बोध पाठ लेकर आत्मस्फुरण के लिए जागृत हो जायें।
5. अच्छी पढ़ाई, सत्संग और सदाचार में श्रद्धा रख और दूसरे के सद्वर्तन, प्रेम और भावनाओं की कद्र करने की वृत्ति से स्वभाव सुधार सकते हैं। खराब स्वभाव को मित्र नहीं, घातक शत्रु मानें।

-ब्र.कु.मोनिका,शांतिवन।



शिलाँग। मेघालय के मुख्यमंत्री माननीय डॉ. मुकुल संगमा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।



असंसोल-ओडिशा। पश्चिम बंगाल के लेबर मिनिस्टर मेलॉय घटक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।



वाराणसी। स्वामी नरेन्द्रानंद जी महाराज को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन, ब्र.कु. दुर्गा, ब्र.कु. दीपेन्द्र व ब्र.कु. विपिन।



भीनमाल-राज.। कैलाश आश्रम के दंडीस्वामी महाराज श्री तिर्थानंद को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता।



गोरखपुर-उ.प्र.। डी.एम. रंजन कुमार, आई.ए.एस. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दुर्गा।



लाहौल स्पीति-मनाली(हि.प्र.)। एस.डी.एम. सुरजीत सिंह राठौड़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संध्या। साथ है ब्र.कु. संतोष।



टुण्डला-उ.प्र.। हरीश भाई को राखी बांधते हुए ब्र.कु. विजय बहन। साथ है ब्र.कु. तनु।



दिल्ली-आर.के.पुरम। कमांडर, कोमोडोर बलबीर मुंजल, वी.एस.एम., डी.ए.सी.आई.डी.एस. को राखी बांधते हुए ब्र.कु. अनीता।



माउण्ट आबू। देलवाड़ा जैन मंदिर के मैनेजर उमेद सिंह तथा मंदिर के पुजारीगणों को राखी बांधने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. शशिकांत, ब्र.कु. मुनीराज, ब्र.कु.प्रभा, जी.एच.आर.सी, ब्र.कु.मीनल, जी.एच.आर.सी, ब्र.कु. अनिल, जी.एच.आर.सी. व अन्य।